मार्च 2023 वर्ष 2, अंक 3

दयालबाग़ एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड टु बी यूनिवर्सिटी)

डी.ई.आई. मासिक समाचार

"सूर्य, ग्रहों और पुच्छलतारों (Comets) की यह सबसे सुंदर प्रणाली केवल एक बुद्धिमान और शक्तिशाली सत्ता के परामर्श और प्रभुत्व से ही आगे बढ़ पाती है। यह सत्ता सभी चीजें नियंत्रित करती है, संसार की आत्मा के रूप में नहीं, बल्कि सब पर शसक या भगवान के रूप में और अपने प्रभुत्व के नित्य व्यवहार के कारण वह कहलाऐंगे Lord God αντοκρατωρ या यूनिवर्सल शासक।"

— आइज़ैक न्यूटन

The Principia: Mathematical Principles of Natural Philosophy

खंड

खंड क : डी.ई.आई. 3

खंड ख : डी.ईआई. - ओ.डी.ई. (डी.ई.आई. ऑनलाइन और दूरस्थ शिक्षा) 6

खंड ग : डी.ई.आई. के भूतपूर्व छात्र (AADEIs & AAFDEI) 9

दयालबाग़ एजुकेषनल इंस्टीट्यूट
(डीम्ड टु बी यूनिवर्सिटी)
दयालबाग़, आगरा– 282005

विषय–सूची

खंड क: डी.ई.आई.

1. दयालबाग़ में 41 वां दीक्षांत सम्पन्न 3
2. डी.ई.आई. टीम का इटली दौरा 4

संकाय समाचार 5

3. शिक्षा संकाय 5
   "शिक्षण–अधिगम में प्रदर्शन कला का एकीकरण" पर दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन 5
   शिक्षाकोप्लब्धियाँ 5
4. विज्ञान संकाय 6
   छात्रोप्लब्धियाँ 6

खंड ख : डी.ई.आई. – ओ.डी.ई. (डी.ई.आई. ऑनलाइन और दूरस्थ शिक्षा)

5. कोऑर्डिनेटर की डेस्क से 6
6. डी.ई.आई के ऑनलाइन और दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम के 2022–23 सत्र के लिए छात्र नामांकन और छात्र प्रोफ़ाइल के आँकड़े (data) 7
7. सूचना कैंद्रों से समाचार 9

खंड ग: डी.ई.आई. के भूतपूर्व छात्र (**AADEIs & AAFDEI**)

8. संपादक की डेस्क से 9
9. चैटजीपीटी: एआई–पावर्ड न्यू–एज (Age) स्टूडेंट कोच 10
10. बाधाओं पर काबू पाना: वित्त तक पहुंच के माध्यम से महिला उद्यमियों को सशक्त बनाना 11
11. पूर्व छात्र बाइट्स 11
12. AAFDEI-APAC पर रिपोर्ट वसंत वुप्पुलुरी द्वारा संकलित 12

प्रकाशन समितियाँ / सम्पादकीय बोर्ड 12

खण्ड 'क' : डी.ई.आई.

दयालबाग़ में 41 वां दीक्षांत सम्पन्न

दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट का 41वां दीक्षांत समारोह 'शिक्षा–स्त्रोत भवन' में गरिमामय रूप से संपन्न हुआ। इस वर्ष, 5815 छात्रों ने डी.ई.आई के विभिन्न पाठ्यक्रमों में डिग्री और डिप्लोमा प्राप्त किए। 156 निदेशक पदक, 03 प्रेसिडेंट पदक और 107 पीएच.डी. डिग्रियां प्रदान की गईं। 2488 स्नातक डिग्री, 818 स्नातकोत्तर डिग्री, 875 डिप्लोमा, 121 स्नातकोत्तर डिप्लोमा, 838 सर्टिफिकेट पास कोर्स, 230 हाईस्कूल और 338 इंटरमीडिएट सर्टिफिकेट छात्रों के बीच वितरित किए गए। श्री अमन प्रताप सिंह और सुश्री तनु कौर को सभी स्नातक परीक्षाओं में सर्वोच्च अंक प्राप्त करने के लिए प्रेसिडेंट पदक से सम्मानित किया गया तथा श्री हर्षवर्धन को सभी स्नातकोत्तर परीक्षाओं में सर्वोच्च अंक प्राप्त करने के लिए प्रेसिडेंट पदक से सम्मानित किया गया। इस विशेष अवसर पर, मुख्य अतिथि श्री संजय जाजू, आईएएस, पूर्व अपर सचिव, रक्षा मंत्रालय, भारत सरकार को 'सिस्टम्स सोसाइटी ऑफ इंडिया (एसएसआई) लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड' से सम्मानित किया गया।

छात्रों के सम्मुख अपने दीक्षांत भाषण में श्री जाजू ने कहा कि दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट जैसे संस्थान न केवल युवाओं के भविष्य का निर्माण करते हैं, बल्कि भविष्य के युवाओं का भी निर्माण करते हैं। छात्र भाग्यशाली हैं कि विश्वविद्यालय ने उन्हें उज्ज्वल भविष्य बनाने के लिए नए ज़माने के कौशल और उपकरणों से लैस किया है। श्री संजय ने कहा कि नवाचार की प्रक्रिया से ही ज्ञान को हमारे समाज के लिए संपदा में बदला जा सकता है। वह डी.ई.आई. द्वारा शुरू की गई कई पहलों को देखकर खुश थे। वैज्ञानिक अनुसंधान के संदर्भ में, कई विषयों में बड़ी संख्या में अनुसंधान मंच बनाए गए हैं और 14 पेटेंट प्रदान किए गए हैं। इसके अतिरिक्त, प्रतिष्ठित अंतरराष्ट्रीय और राष्ट्रीय संस्थानों के साथ बड़ी संख्या में सक्रिय सहयोग के साथ 31 पेटेंट प्रकाशित किए गए हैं। इस प्रकार प्रभावित होकर, उन्होंने ज़ोर देकर कहा कि अब, इस प्रगति के बार आरेख को ऊपर उठाने पर ज़ोर देना चाहिए, अनुसंधान में सफलताओं का लक्ष्य रखना चाहिए, और न केवल भारत में बल्कि दुनिया भर में अपनी बात कहनी चाहिए। मुख्य अतिथि ने आशा व्यक्त की कि विश्वविद्यालय में नवाचार को जीवन के एक तरीके के रूप में अपनाया जाता है और वह देर–सवेर डी.ई.आई. विश्वविद्यालय से एक यूनिकॉर्न को उभरता हुआ देखेंगे। अंत में, विशिष्ट अतिथि ने सभी छात्रों से न केवल अपने और परिवार के लिए, बल्कि प्रिय विश्वविद्यालय, राज्य और निश्चित रूप से राष्ट्र के लिए भी गौरव की कामना की।

संस्थान के निदेशक प्रो. पी.के. कालरा ने इस अवसर पर संस्थान की रिपोर्ट प्रस्तुत की। उन्होंने बताया कि, दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी) शिक्षा के लिए अपने अभिनव, वैश्विक और बहु–भिन्न दृष्टिकोण के लिए अच्छी तरह से पहचाना जाता है। शिक्षा के अलावा, छात्रों को नैतिक, नागरिक और सामाजिक मूल्यों और गुणों का अभ्यास करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। महिला सशक्तिकरण, आर्थिक समावेशिता और पर्यावरण निगरानी और सुधार के संदर्भ में डी.ई.आई. का पर्याप्त सामाजिक प्रभाव पड़ा है। परिसर में प्रचारित गतिविधियां संयुक्त राष्ट्र सतत् विकास लक्ष्यों (यूएनएसडीजी) के अनुरूप हैं जिनमें नवाचार, महिला सशक्तिकरण, शिक्षा, एक स्थायी स्वास्थ्य देखभाल आवास का निर्माण, वायु और जल गुणवत्ता निगरानी, और कृषि–पारिस्थितिकी–सह–सटीक खेती और डेयरी शामिल हैं। छात्र एक मितव्ययी जीवन शैली से मजबूत होते हैं जो सदा–विकसित और अनुकूल 'बेहतर दुनियादारी' को बढ़ावा देता है, जो प्राचीन काल के ऋषियों और मुनियों द्वारा अभ्यास किए गए जंगलों में घोर सांसारिकता और अनुकूलन के चरम के बीच 'गोल्डन मीन पाथ' का प्रतिनिधित्व करता है। प्रो. कालरा ने उल्लेख किया कि डी.ई.आई. में हम ऐसे शोध को प्रोत्साहित करते हैं जिसका लोगों और

ग्रह दोनों पर प्रभाव पड़ता है, जलवायु परिवर्तन, खाद्य सुरक्षा, नवीकरणीय ऊर्जा और स्वास्थ्य सेवा कुछ ऐसे क्षेत्र हैं। संकायों के नए सदस्यों को प्राथमिक सुविधाएं प्रदान कर उनका प्रतिभावर्धन किया जाता है। 2050 से 2100 तक की समयावधि में प्रत्याशित कार्यक्षेत्र जिसमें हमारे स्नातक छात्रों को क्वांटम कंप्यूटिंग और सूचना प्रसंस्करण, चेतना (कला, विज्ञान और अभियांत्रिकी की त्रिपक्षीय दृष्टिकोण से जांच), और नवीकरणीय ऊर्जा जैसे नए अत्याधुनिक क्षेत्रों में अनुसंधान करने के लिए प्रोत्साहित किया जाएगा। इसका उद्देश्य भविष्य की वैश्विक चुनौतियों के लिए समग्र समाधान प्रदान करने के लिए कुशाग्र बुद्धि वाले शोधकर्ताओं को तैयार करना है। डी.ई.आई. अपने अंतरराष्ट्रीय सहयोगियों के साथ इन क्षेत्रों में दो दशकों से काम कर रहा है, जिसके परिणामस्वरूप कई अनुसंधान प्लेटफार्मों का विकास हुआ है जिसने स्थानीय समस्याओं को हल करने में भी मदद की है। यह अपनी स्थापना के बाद से कई मिनी–प्लांट और कौशल और व्यावसायिक कार्यक्रम प्रदान करता है। उन्होंने यह भी कहा कि महिला अधिकारिता को सुदृढ़ करने के लिए एक कदम के रूप में, डीईआई के आईसीटी सतत् शिक्षा केंद्र ने महिलाओं के लिए रक्षा बलों में प्रवेश के लिए एक प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू किया है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता डी.ई.आई. और दयालबाग की राधास्वामी सत्संग सभा के अध्यक्ष श्री गुर सरूप सूद ने की।

इस महत्त्वपूर्ण अवसर पर डी.ई.आई. उत्पादों की एक विशेष प्रदर्शनी और एक सामाजिक–सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित किया गया, जिसमें मुख्य अतिथि ने भाग लिया और उसकी बहुत सराहना की।

इस प्रकार श्री जाजू ने अभिभूत होकर अपनी भावनाओं को व्यक्त किया : ''यह व्यक्तिगत रूप से मेरे लिए एक बहुत बड़ी सीख और आध्यात्मिक जागृति रही है। मैं डी.ई.आई द्वारा किए जा रहे कार्यों से प्रभावित हूँ। मुझे इसे प्रत्यक्ष रूप से देखने का अवसर मिला। भावी पीढ़ियाँ मूल्य और कौशल दोनों में हमारे देश की ध्वजवाहक हैं। देखने और सीखने के लिए यह उत्कृष्ट है।''

उन्होंने अपने व्हाट्सएप संदेश के माध्यम से आगे कहा: ''यह मेरा सबसे विनम्र अनुभव था जिसने मुझे जीवन की सच्ची सुंदरता और समाज के सामाजिक और आध्यात्मिक उत्थान के लिए निःस्वार्थ कार्य करने की अनुमति दी''।

डी.ई.आई. टीम का इटली दौरा

दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट ''डिफरेंट एनर्जी वेक्टर इंटीग्रेशन फॉर स्टोरेज ऑफ एनर्जी (डिवाइस)'' पर एक अंतरराष्ट्रीय सहयोग मिशन इनोवेशन आर एंड डी प्रोजेक्ट (डीएसटी एमआई कॉल –19) में भाग ले रहा है। संघ में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, रुड़की, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, दिल्ली, दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट, आगरा–282005, एफ. बी.के – फॉन्डेज़िऑन ब्रूनो केसलर, इटली, यू आई टी – नॉर्वे का आर्कटिक विश्वविद्यालय, और यू. एम. यू – उमेआ विश्वविद्यालय, स्वीडन शामिल हैं। भारत के निम्नलिखित छह संघ सदस्यों का एक प्रतिनिधिमंडल 24 से 30 मार्च 2023 तक एफ. बी. के. , इटली का दौरा करने के लिए प्रगति की समीक्षा करने, चल रही परियोजना पर तकनीकी चर्चा करने और भविष्य की परियोजनाओं के साथ सहयोग बढ़ाने की संभावना तलाशने के लिए निर्धारित है:

1. प्रो. ए.के. सक्सेना, विद्युत अभियांत्रिकी विभाग, दयालबाग शैक्षणिक संस्थान
2. प्रो. डी. भगवान दास, विद्युत अभियांत्रिकी विभाग, दयालबाग शैक्षणिक संस्थान
3. प्रो. विशाल कुमार, विद्युत अभियांत्रिकी विभाग, आईआईटी, रुड़की
4. प्रो. बरजीव त्यागी, विद्युत अभियांत्रिकी विभाग, आईआईटी, रुड़की
5. प्रो. रवि कुमार, यांत्रिक अभियांत्रिकी विभाग, आईआईटी, रुड़की
6. डॉ. दिबाकर रक्षित, ऊर्जा विज्ञान और अभियांत्रिकी विभाग, आईआईटी, दिल्ली

परियोजना का संक्षिप्त विवरण निम्नांकित है:

> विद्यमान माइक्रोग्रिड विभिन्न नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों को ग्रिड के साथ एकीकृत करते हैं। हालाँकि, ऐसे माइक्रोग्रिड्स विद्युत ऊर्जा के प्रति अत्यधिक पक्षपाती हैं। अक्षय ऊर्जा के अन्य रूपों को ग्रिड के साथ एकीकरण के लिए विद्युत ऊर्जा में परिवर्तित किया जाता है।

वर्तमान में, ऊर्जा का भंडारण भी मुख्य रूप से विद्युत है लेकिन यह रणनीति ऊर्जा के विविध स्रोतों के कुशल और तर्कसंगत अंतिम उपयोग को रोकती है, विशेष रूप से जहाँ ऊर्जा गर्मी के रूप में उपलब्ध है और उसी रूप में उपयोग की जानी चाहिए।

इसलिए, अक्षय ऊर्जा माइक्रोग्रिड की अधिक समग्र परिभाषा और डिज़ाइन के विकास की आवश्यकता है, जो अक्षय ऊर्जा के सभी रूपों के तर्कसंगत अंत–उपयोग और भंडारण के लिए ऊर्जा के विभिन्न रूपों के कुशल एकीकरण/परिवर्तन को सुनिश्चित करता है। एक रूप से दूसरे रूप में ऊर्जा का इष्टतम आदान–प्रदान।

परियोजना का लक्ष्य विषम भंडारण और प्रासंगिक ऊर्जा रूपांतरण इंटर–लिंकेज के साथ विद्युत और तापीय ऊर्जा के एक हाइब्रिड माइक्रोग्रिड को डिजाइन और कार्यान्वित करना है। इसके अतिरिक्त, ग्रामीण विकास को आवश्यक प्रोत्साहन देने के लिए सामान्य रूप से और विशेष रूप से ग्रामीण परिवेश में ऊर्जा की जरूरतों के समाधान के रूप में इसकी उपयोगिता पर जोर देने के लिए संचालित का प्रदर्शन करना।

परियोजना प्रतिभागिताः

संगठन का नाम	देश
भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान	रुड़की, भारत
भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान	दिल्ली, भारत
दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट	आगरा, भारत
यू आई टी नॉर्वे, आर्कटिक विश्वविद्यालय,	नॉर्वे
फॉन्डेज़िऑन ब्रूनो केसलर	इटली
उमेआ विश्वविद्यालय	स्वीडन

"हमने आगरा की यात्रा की, जहाँ हमने दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (डी.ई.आई) का दौरा किया, जो एक ओपन–एयर–क्लासरूम यूनिवर्सिटी है, जो सतत् प्रथाओं, आत्म–अनुशासन और आध्यात्मिकता पर केंद्रित है। डी.ई.आई. ने आस–पास के कम आय वाले समुदायों के महत्त्वपूर्ण उन्नयन के लिए योगदान किया है। आगरा में, हमें ताजमहल की अद्वितीय सुंदरता का अनुभव करने का अवसर मिला। सभी जगहों पर, मेरा उत्कृष्ट आतिथ्य किया गया, जिसमें महान भारतीय भोजन और जोशीला सामाजिक संपर्क शामिल था।"

–14–15 जनवरी, 2023 को संस्थान के दौरे पर आईईईई सिग्नल प्रोसेसिंग सोसाइटी की अध्यक्ष और इलेक्ट्रिकल और कंप्यूटर इंजीनियरिंग विभाग, न्यू जर्सी, यूएसए के रटगर्स विश्वविद्यालय में प्रतिष्ठित प्रोफेसर प्रो एथिना पेट्रोपुलु द्वारा टिप्पणी।

संकाय समाचार
शिक्षा संकाय
''शिक्षण–अधिगम में प्रदर्शन कला का एकीकरण'' पर दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन

''शिक्षण–अधिगम में प्रदर्शन कला का एकीकरण'' पर दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन 24–25 फरवरी 2023 को पंडित मदन मोहन मालवीय नेशनल मिशन ऑन टीचर्स एंड टीचिंग (पी.एम.एम.एम.एन.एम.टी.टी.) के अंतर्गत स्कूल ऑफ एजुकेशन, फैकल्टी ऑफ एजुकेशन, डी. ई .आई द्वारा ''टीचिंग – लर्निंग में परफॉर्मिंग आर्ट का एकीकरण'' पर दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। प्रो. सुधा सहगल, संगीत विभाग, डी.ई.आई आगरा ने चैती कजरी जैसे लोकगीतों पर इंटरैक्टिव सत्र आयोजित किए और कक्षा में इसके कार्यान्वयन के लिए रचनात्मक विचार दिए। प्रो. नीलू शर्मा, संगीत विभाग, डी.ई.आई ने तबला और कथक पर विभिन्न तालों का प्रदर्शन किया और शिक्षण में उनका एकीकरण किया। श्रीमती काजल शर्मा ने कथक के तकनीकी तत्वों और कक्षा में उनके एकीकरण पर चर्चा की। छात्रों ने हैंड्स–ऑन अभ्यास सत्र के दौरान संगीत गायन और नृत्य के माध्यम से शिक्षण–अधिगम का प्रदर्शन किया। कार्यशाला का संचालन डॉ. मनु शर्मा ने किया। कार्यशाला में 100 छात्र शिक्षक, 30 प्रशिक्षण शिक्षक और 35 विश्वविद्यालय के शिक्षकों ने भाग लिया।

शिक्षकोप्लब्धियाँ:

- प्रो. एनपीएस चंदेल ने पीएसएस सेंट्रल इंस्टीट्यूट ऑफ वोकेशनल एजुकेशन, श्यामला हिल्स, भोपाल (एमपी) भारत द्वारा 13 से 16 फरवरी 2023 तक ''व्यावसायिक शिक्षकों के लिए व्यावसायिक मानक का विकास'' विषय पर आयोजित कार्यशाला में एक संसाधन व्यक्ति के रूप में कार्य किया।
- प्रो. ज्योति गोगिया और डॉ. सोना दीक्षित ने एशिया में पार्टिसिपेटरी रिसर्च (प्रिया) और यूनेस्को चेयर फॉर कम्युनिटी बेस्ड

पार्टिसिपेटरी रिसर्च, विक्टोरिया विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित ''भारत में K4C हब और नेटवर्क की समीक्षा और योजना'' पर एक बैठक में डी.ई.आई का प्रतिनिधित्व किया , कनाडा, 6 फरवरी 2023 को। बैठक नई दिल्ली में प्रिया के केंद्र में आयोजित की गई थी। बैठक की अध्यक्षता यूनेस्को के सह–अध्यक्ष – डॉ. राजेश टंडन और डॉ. बड हॉल ने की। डी.ई.आई के प्रतिनिधियों ने एसडीजीएस के लिए संस्थान के योगदान के बारे में बात की और बताया कि कैसे डी.ई.आई "व्यक्ति–से–समुदाय" दृष्टिकोण लेता है और सामूहिक गतिविधियों को अपने शैक्षिक ढांचे में एकीकृत करता है जो बड़े पैमाने पर समुदाय की जरूरतों में योगदान देता है।

विज्ञान संकाय:

छात्रोप्लब्धियाँ:

- श्रेया सत्संगी, द्वितीय वर्ष, बी.एससी. (संज्ञानात्मक विज्ञान) ने 7 और 8 फरवरी 2023 को आयोजित विषय–विविध धर्मों में शब्द चेतना, अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में 'एक्सप्लोरिंग मैकेनिज़्म ऑफ रिलीजियस चैंटिंगै इन वेस्टर्न कल्चर स्पेक्ट्रोग्राम एनालिसिस' शीर्षक से एक शोध पत्र प्रस्तुत किया।
- अभिषेक गुप्ता, द्वितीय वर्ष, बी.एससी. (कॉग्निटिव साइंस) ने 22–26 फरवरी 2023 तक यूएसवी न्यूरोएस्थेटिक्स लैब, यूनिवर्सिटी ऑफ सुकेवा, रोमानिया द्वारा आयोजित न्यूरोएस्थेटिक्स 2023 के अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में अंतर्जालीय माध्यम से ''कॉग्निटिव मैपिंग ऑफ म्यूजिकल एस्थेटिक्स'' नामक एक शोध पत्र प्रस्तुत किया।

खण्ड 'ख' : डी.ई.आई.–ओ.डी.ई. (डी.ई.आई. ऑनलाइन और दूरस्थ शिक्षा)

कोऑर्डिनेटर की डेस्क से

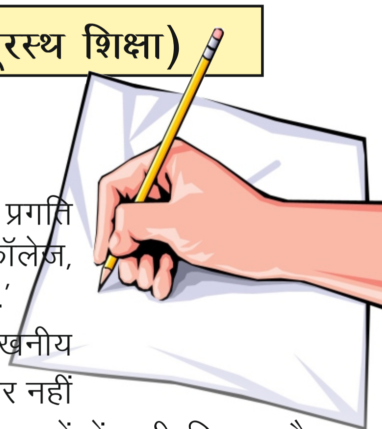

हाल ही में एक प्रकाशन (Publication) में, यह बताया गया है कि 'भारत का उच्च शिक्षा परिदृश्य प्रगति और चुनौतियों का मिश्रण है [1]। इसका दायरा बहुत बड़ा है: 1,043 विश्वविद्यालय, 42,343 कॉलेज, और 11,779 स्टैंड–अलोन संस्थान इसे दुनिया के सबसे बड़े उच्च शिक्षा क्षेत्रों में से एक बनाते हैं....'

हालांकि, प्रकाशन में आगे बताया गया है कि भारत ने विज्ञान और व्यवसाय सहित कई उल्लेखनीय उच्च शिक्षा संस्थानों का निर्माण किया है, लेकिन उनमें से कोई भी वैश्विक रैंकिंग में शीर्ष स्थान पर नहीं है। रिपोर्ट में आगे चलकर यह बताया गया है कि, ''पूरे भारत में, राज्यों के बीच गुणवत्ता संस्थानों में भारी भिन्नता है। उदाहरण के लिए, भारत के नेशनल इंस्टीट्यूशनल रैंकिंग फ्रेमवर्क (एनआईआरएफ), 2021 के अनुसार, देश के सर्वश्रेष्ठ कॉलेज भारत के 28 राज्यों में से 9 में केंद्रित हैं। यह भी उल्लेख किया गया है कि 40,000 कॉलेजों में से अधिकांश अपने ढांचे के लिए अपने मातृ विश्वविद्यालय (mother university) पर निर्भर हैं जबकि सार्वजनिक (public) विश्वविद्यालय खुद बहुत अधिक तनावपूर्ण (overstretched) स्थिति में हैं।

इस पृष्ठभूमि में, 3 अप्रैल, 2015 को बीएचयू वाराणसी में यूजीसी द्वारा प्रायोजित choice-बेस्ड क्रेडिट सिस्टम पर कार्यशाला की कार्यवाही जिसमें डी.ई.आई के 5 फैकल्टी सदस्यों ने भाग लिया था, पर शिक्षा सलाहकार समिति को प्रस्तुत एक रिपोर्ट से निम्नलिखित उद्धरण, ध्यान देने योग्य है: कुलपति या उनके प्रतिनिधि और अन्य प्रतिभागियों ने यूजीसी से प्राप्त निर्देश पर

अपनी चिंता व्यक्त की कि जुलाई 2015 से च्वाएस बेस्ड क्रेडिट सिस्टम शुरु किया जाना चाहिए। अधिकांश विश्वविद्यालयों ने ऐसा करने में असमर्थता व्यक्त की। क्योंकि कुछ वार्षिक प्रणाली पर थे, जबकि दूसरों को अभी भी क्रेडिट सिस्टम शुरू करना था, और जिन लोगों ने क्रेडिट सिस्टम शुरू किया था, उन्हें कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा था, और उनसे संबद्धित कई कॉलेजों ने ऐसा नहीं किया था। फैकल्टी की भारी कमी को एक अन्य बड़ी समस्या बताया गया। उनका कहना था कि परिवर्तन क्रमिक और चरणों में होना चाहिए।

उपरोक्त उद्धरण में की गई टिप्पणियां संदर्भित प्रकाशन में की गई टिप्पणियों के अनुरूप हैं।

उपरोक्त प्रकाशन [1] में किया गया एक और महत्वपूर्ण बिंदु 'राष्ट्रीय और राज्य दोनों स्तरों पर पर्याप्त धन की कमी है', जिसे कुछ शिक्षाविद् एक प्रमुख आवश्यकता मानते हैं।

प्रोफेसर लॉरेंस समर्स, जो वर्ष 2001 से 2006 तक हार्वर्ड विश्वविद्यालय के अध्यक्ष रहे, ने 'शिक्षा और विकास में उच्च शिक्षा की भूमिका' पर एक लेख में बताया हैं [2]: 'शीर्ष के आंकड़ों को देखते हुए दुनिया में रैंकिंग विश्वविद्यालयों में यह स्पष्ट है कि अमेरिकी विश्वविद्यालय शीर्ष समूह का एक बहुत बड़ा हिस्सा हैं और उनके अनुसार, निम्नलिखित तीन कारक (factors) उनकी ताकत में योगदान करते हैं:

i. अमेरिकी विश्वविद्यालय प्रणाली सर्वश्रेष्ठ छात्रों, सर्वश्रेष्ठ शिक्षकों और उच्चतम रैंकिंग के लिए प्रतिस्पर्धा करने वाले विश्वविद्यालयों के साथ अत्यधिक प्रतिस्पर्धी है और यह गुणवत्ता के लिए एक बहुत शक्तिशाली प्रोत्साहन है।
ii. अमेरिकी प्रणाली की दूसरी ताकत उनका शासकीय (governance) मॉडल है जो गतिशीलता, लचीलेपन और ठीक अवसर पर तेजी से आगे बढ़ने की क्षमता पर आधारित है, जिसमें इसके सबसे महत्वपूर्ण निर्णय उन क्षेत्रों के विशेषज्ञों द्वारा किए जाते हैं और सामान्य लीडर्स द्वारा नहीं बल्कि साथ ही साथ उत्कृश्टता के लिए जवाबदेही बनाए रखते हैं।
iii. अमेरिकी प्रणाली की तीसरी ताकत निजी क्षेत्र पर इसकी पर्याप्त निर्भरता है। विश्वविद्यालय के संसाधनों का अधिक हिस्सा-Loin's Share (लायन्स शेयर) – वफादार पूर्व छात्रों से आता है।

(प्रो. वीबी गुप्ता)

संदर्भः

[1] India's Higher Education Landscape by David Tobenkin, NAFSA: Association of International Educators, April 12, 2022

[2] Education and Development: The Role of Higher Education by Lawrence Summers published by the Australian National University, 2011.

डी.ई.आई के ऑनलाइन और दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम के 2022–23 सत्र के लिए छात्र नामांकन और छात्र प्रोफ़ाइल के आँकड़े (data)

2022–23 सत्र के दौरान, जबकि यूजी/पीजी डिग्री स्तर के यूजीसी द्वारा अधिकृत ऑनलाइन कार्यक्रम पर्यवेक्षित (Supervised) ऑनलाइन मोड में पेश किए गए हैं, प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम ऑफ़लाइन मोड में संचालित किए जा रहे हैं, जैसा कि पिछले कई वर्षों से चलन में था।

2022–23 सत्र में कुल छात्रों का नामांकन 1054 था, जिसमें से 632 छात्रों का नामांकन यूजी और पीजी डिग्री स्तर के कार्यक्रमों में और 422 छात्रों का तीन स्टैंड–अलोन मॉड्यूलर कार्यक्रमों सहित प्रमाणपत्र स्तर के कार्यक्रमों में नामांकन हुआ था। छात्र नामांकन के आँकड़े नीचे कार्यक्रम–वार और राज्य–वार (State-wise) प्रस्तुत किये गये हैं, इसके बाद श्रेणी (category), क्षेत्र और लिंग के संदर्भ में छात्र प्रोफ़ाइल पर डेटा दिया गया है।

छात्र नामांकनः

Programmes-wise	
BBA 1 st Yr	136
BBA 2 nd Yr	87
BBA 3rs Yr	54
B.Com (Hons) 1 st Yr	98
B.Com (Hons) 2 nd Yr	92
B.Com (Hons) 3rd Yr	64
B.A (Hons) So.Sci. 1st Yr	8
B.A (Hons) So.Sci 2nd Yr	3
M. Com 1st Yr	39
M. Com 2nd Yr	46
MA Theology 1st Yr	4
MA Theology 2nd Yr	1
Dress Designing & Tailoring	127
Electrician	73
OACO	70
MVM (4W)	51
Cutting & Sewing	23
MOM&SP	17
MVM (2W)	15
Wireman	15
Block Printing	12
Bamboo Application Technology	8
TD&P	8
Industrial Painting	3
Total	1054

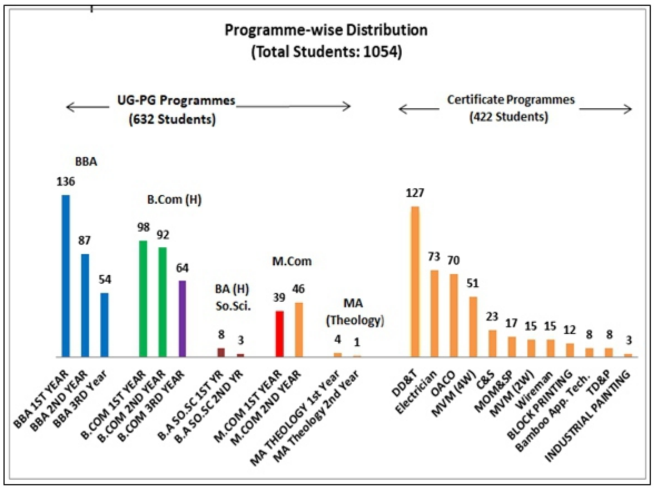

छात्र प्रोफ़ाइलः

Stat-wise Student Distribution	
Uttar Pradesh	626
Andhra Pradesh	114
Punjab	50
Haryana	46
Madhya Pradesh	40
Bihar	39
Jharkhand	31
Delhi	25
Gujarat	19
Maharashtra	13
Jammu & Kashmir	12
Telangana	11
Tamil Nadu	10
Uttrakhand	9
Karnataka	8
West Bengal	1
Total	1054

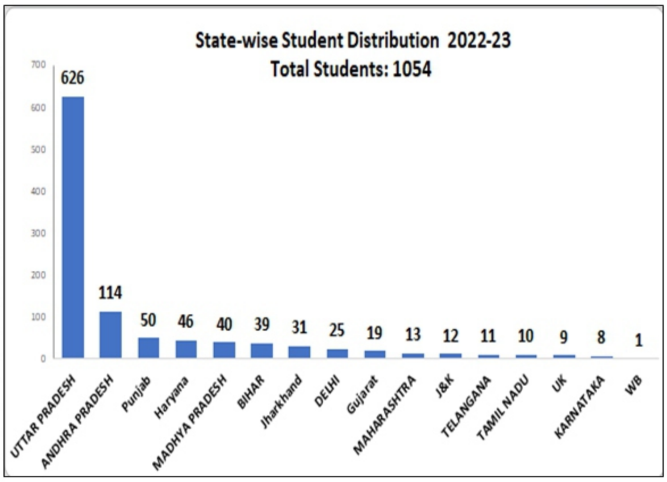

[1] श्रेणी वारः

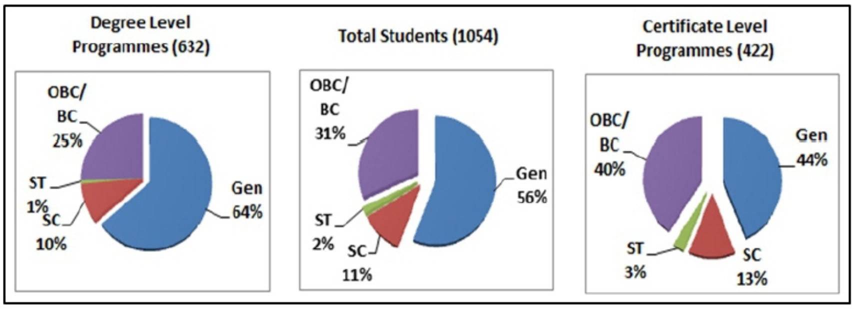

[2] क्षेत्र के लिहाज सेः

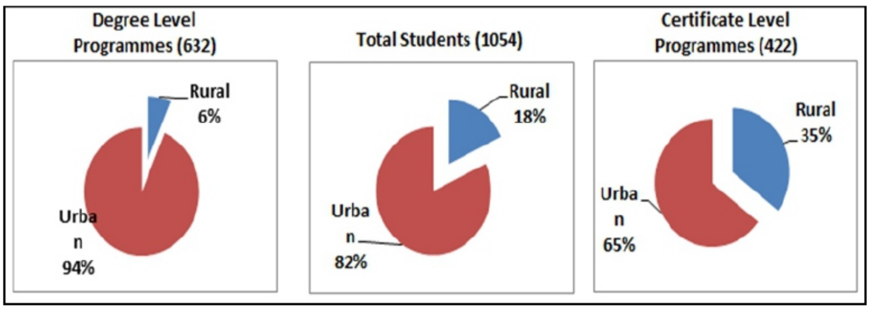

[3] लिंगवार

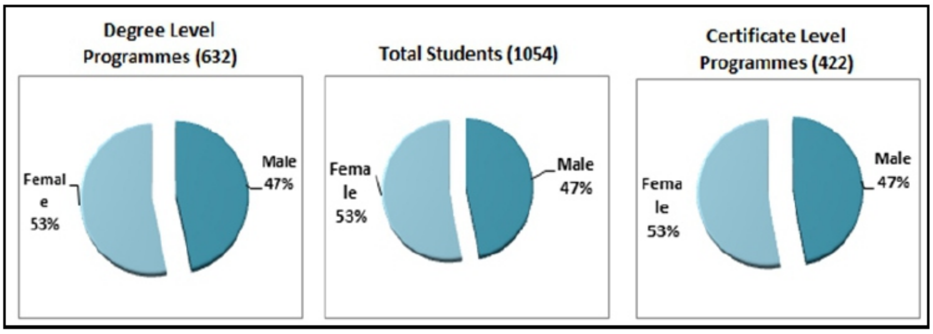

ऊपर दिखाए गए डिग्री–स्तर और प्रमाणपत्र–स्तर के कार्यक्रम में छात्र नामांकन वितरण के संबंध में, निम्नलिखित उल्लेखनीय अवलोकन किए जा सकते हैं:

[1] प्रमाणपत्र स्तर के कार्यक्रमों में आरक्षित श्रेणी के छात्रों का नामांकन अपेक्षाकृत अधिक होता है।
[2] प्रमाणपत्र स्तर के कार्यक्रमों में ग्रामीण क्षेत्रों के छात्रों की संख्या उल्लेखनीय रूप से अधिक है।
[3] डिग्री स्तर और प्रमाणपत्र स्तर दोनों कार्यक्रमों में लिंग वितरण महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा देने के प्रयासों का प्रमाण है।

उपरोक्त टिप्पणियां (1) और (2) हमारे सामान्य अनुभव के अनुरूप हैं। प्रमाणपत्र स्तर के कार्यक्रमों में आरक्षित श्रेणी के छात्रों की संख्या अपेक्षाकृत अधिक होती है और ग्रामीण क्षेत्रों के छात्रों की संख्या काफी अधिक होती है। वे पुष्टि करते हैं कि डिग्री और प्रमाणपत्र स्तर के कार्यक्रमों के लिए निर्वाचन क्षेत्र अच्छी तरह से परिभाषित हैं। अवलोकन (3) महिला छात्रों की सामान्य से अधिक संख्या (आमतौर पर 40%) दिखाता है जो एक स्वागत योग्य प्रवृत्ति है।

सूचना केंद्रों से समाचार
भोपाल केंद्र में स्थापित अग्निशमन यंत्र

दयालबाग, आगरा में किए गए महत्वपूर्ण सुरक्षा उपायों से प्रेरित होकर, DEI भोपाल केंद्र ने 4 मार्च, 23 को अपने भवन में 2 ABC प्रकार के अग्निशामक यंत्र स्थापित किए। सुश्री रचना सिंह द्वारा एक पीपीटी प्रस्तुति की गई और कंपनी के प्रतिनिधि द्वारा एक व्यावहारिक डेमो भी सूचना केंद्र के शिक्षकों और अन्य लोगों की जागरूकता के लिए आयोजित किया गया था।

खण्ड 'ग' : डी.ई.आई के भूतपूर्व छात्र (AADEIs & AAFDEI)

संपादक की डेस्क से

परम गुरु हुज़ूर साहब जी महाराज ने अपनी अनंत कृपा और दयामय भाव से टिप्पणी की थी, "यह स्पष्ट है कि महिला शिक्षा की उपेक्षा मुख्य रूप से हमारी वर्तमान समस्याओं के लिए जिम्मेदार है"। इसलिए, उन्होंने आग्रह किया कि हम "महिला शिक्षा को प्रोत्साहित करके और इसके लिए उपयुक्त सुविधाएं प्रदान करके अपनी नारीत्व के उत्थान के लिए एक संयुक्त प्रयास करें"।
एक महिला, अच्छी तरह से सूचित और शिक्षित, ज्ञान, कौशल और आत्मविश्वास के साथ उस समाज में शांति और समृद्धि लाएगी जिससे वह संबंधित है। 1917 में दयालबाग़ में स्थापित मिडिल स्कूल की विशिष्ट विशेषताओं में से एक, पहले दिन से ही कक्षा पाँच तक सह–शिक्षा कक्षाओं का प्रारंभ होना था। ऐसे समय में जब लड़कियों को अनिच्छा से विशुद्ध रूप से लड़कियों के स्कूलों में ही

भेजा जाता था, यह शायद देश का एकमात्र स्कूल था जिसमें सह–शिक्षा कक्षाएं थीं। इस प्रकार दयालबाग़ में लड़कियों के लिए एक मजबूत शिक्षा प्रणाली के बीज पहले ही बोए जा चुके थे, जब 1930 में प्रेम विद्यालय गर्ल्स इंटर कॉलेज और 1947 में महिला प्रशिक्षण कॉलेज की स्थापना की गई थी। महिलाओं को शिक्षित और सशक्त बनाना एक बड़ा कदम है, लेकिन महिला सशक्तिकरण लेख के रूप में इस मुद्दे में निर्दिष्ट है कि सामाजिक संस्थाओं को भी अधिक लिंग–समावेशी होना होगा। AFFDEI&APAC द्वारा कैरियर विकास सहायता प्रदान करने के लिए किए गए प्रयास प्रशंसनीय हैं क्योंकि इस तिमाही के लिए महिला अधिकारिता पर वेबिनार का आयोजन किया गया है। हम अपने पाठकों को aadeisnewsletter@gmail-com पर अपने विचार साझा करने के लिए आमंत्रित करते हैं और उनसे सुनने के लिए उत्सुक हैं!

चैटजीपीटीः एआई–पावर्ड न्यू–एज (Age) स्टूडेंट कोच
अंकित भटनागर, वर्तमान में इंजीनियरिंग मैनेजर, कंपास इंडिया
बैचः बीएससी इंजीनियरिंग (2006), एमबीए (2016), डीईआई

ChatGPT प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण और AI के क्षेत्र में एक तेजी से लोकप्रिय उपकरण बन गया है, जिसमें लाखों व्यक्ति और संगठन संकेतों या प्रश्नों के आधार पर मानव–समान पाठ उत्पन्न करने के लिए अपनी क्षमताओं का उपयोग कर रहे हैं। जनवरी में, यह बताया गया था कि चैटजीपीटी ने 100 मिलियन सक्रिय उपयोगकर्ताओं को पार कर लिया था, जो डिजिटल दुनिया में इसकी निरंतर वृद्धि और प्रासंगिकता को उजागर करता है। यह Open AI द्वारा विकसित और नवंबर 2022 में लॉन्च किया गया एक आर्टिफिशियल इंटेलिजेंट जनरेटिव प्री–ट्रेन्ड ट्रांसफॉर्मर फैमिली चैटबॉट है।

जबकि कई शिक्षकों ने उपकरण के खिलाफ बहस की है और उनकी संभावित चिंता यह है कि छात्र असाइनमेंट पूरा करने के लिए एआई भाषा मॉडल पर अत्यधिक निर्भर हो सकते हैं, और लंबी अवधि में सफलता के लिए जरूरी महत्त्वपूर्ण सोच विकसित नहीं कर सकते हैं, हालांकि, यह भी माना जाता है शिक्षा में एआई भाषा मॉडल का उपयोग इस बात पर निर्भर करेगा कि उन्हें कैसे लागू किया जाता है और सीखने की प्रक्रिया में एकीकृत किया जाता है। वास्तव में, चैटजीपीटी एक नए जमाने के छात्र कोच के रूप में उभरा है। निम्नलिखित बिंदु इस विचार को सही ठहराएंगेः

आभासी कोच की 24X7 उपलब्धता
आज की तेजी से भागती दुनिया में, छात्रों को लगातार चुनौतियों और बाधाओं का सामना करना पड़ता है जो उनके शैक्षणिक प्रदर्शन और व्यक्तिगत विकास को प्रभावित कर सकते हैं। चैटजीपीटी छात्रों को 24 X 7 सहायता करने और व्यक्तिगत कोचिंग प्रदान करने के लिए एक विशेष रूप से डिजाइन किया गया भाषा मॉडल है।

प्रयोग करने और सीखने में आसान
चैटजीपीटी प्राकृतिक भाषा में संचार कर सकता है। छात्र चैटजीपीटी के साथ उसी तरह बातचीत कर सकते हैं जैसे वे एक मानव कोच के साथ करते हैं, सवाल पूछते हैं, मार्गदर्शन मांगते हैं और वास्तविक समय में प्रतिक्रिया प्राप्त करते हैं। यह न केवल कोचिंग के अनुभव को अधिक आकर्षक बनाता है बल्कि छात्रों को उनके संचार कौशल और आत्मविश्वास का निर्माण करने में भी मदद करता है।

निजीकृत कोच
चैटजीपीटी प्रत्येक छात्र की अनूठी जरूरतों को पूरा करने के लिए कोचिंग अनुभव को वैयक्तिकृत कर सकता है। छात्र के शैक्षणिक प्रदर्शन, सीखने की शैली और वरीयताओं का विश्लेषण करके, चैटजीपीटी व्यक्तिगत छात्र के लिए प्रासंगिक कोचिंग और सिफारिशें प्रदान कर सकता है। यह वैयक्तिकृत दृष्टिकोण छात्रों को उनके लक्ष्यों पर प्रेरित, व्यस्त और केंद्रित रहने में मदद करता है।

सीखने के संसाधनों तक व्यापक पहुंच
चैटजीपीटी छात्रों को सफल होने में मदद करने के लिए संसाधनों और उपकरणों की एक विस्तृत श्रृंखला भी प्रदान कर सकता है। इसमें अध्ययन सामग्री, परीक्षा की तैयारी के लिए युक्तियाँ और रणनीतियाँ, असाइनमेंट और प्रोजेक्ट सहायता, और कैरियर मार्गदर्शन शामिल हैं। इन संसाधनों तक पहुँच बनाकर छात्र अधिक प्रभावी ढंग से सीख सकते हैं, नए कौशल विकसित कर सकते हैं और अपनी पूरी क्षमता हासिल कर सकते हैं।

मानसिक स्वास्थ्य और कल्याण
चैटजीपीटी उन छात्रों के लिए एक मूल्यवान संसाधन हो सकता है जो मानसिक स्वास्थ्य के मुद्दों से जूझ रहे हैं। छात्रों को अपनी चिंताओं और भावनाओं को साझा करने के लिए एक सुरक्षित और गोपनीय स्थान प्रदान करके, चैटजीपीटी छात्रों को तनाव, चिंता और

अन्य मानसिक स्वास्थ्य चुनौतियों का प्रबंधन करने में मदद कर सकता है जो अकादमिक प्रदर्शन और समग्र कल्याण को प्रभावित कर सकते हैं। अंत में, जैसे–जैसे दुनिया विकसित हो रही है, यह देखना रोमांचक है कि कैसे चैटजीपीटी जैसी तकनीक छात्रों को आकर्षक और दिलचस्प तरीके से फलने–फूलने और सीखने में मदद कर सकती है।

बाधाओं पर काबू पानाः वित्त तक पहुंच के माध्यम से महिला उद्यमियों को सशक्त बनाना
पंकज सिंह ठाकुर, वर्तमान में सीईओ, हेड हेल्ड हाई फाउंडेशन बैचः थियोलॉजी में पीजी डिप्लोमा (2013), डीईआई

भारत में सभी उद्यमियों में 14% से कम महिलाएं हैं। महिलाओं को व्यवसायों की स्थापना और संचालन में कई बाधाओं का सामना करना पड़ता है, वित्त तक पहुंच अक्सर एक प्रमुख मुद्दे के रूप में रिपोर्ट की जाती है। महिला उद्यमियों को वित्तीय संस्थानों से 19% की अस्वीकृति दर का सामना करना पड़ता है, जो पुरुषों (8%) से दोगुनी है। अंतर्राष्ट्रीय वित्त निगम (IFC) के अनुसार, महिला उद्यमियों के लिए क्रेडिट गैप 1.37 लाख करोड़ रुपये (20.52 बिलियन अमेरिकी डॉलर) से अधिक थाय महिलाओं की वित्तीय जरूरतों का 70% हिस्सा अभी तक पूरा नहीं हुआ है।

यह उधारदाताओं के लिए एक बड़ा बाजार अवसर प्रस्तुत करता है, जिसके परिणामस्वरूप सभी शामिल लोगों के लिए जीत की स्थिति हो सकती है – महिला उद्यमियों की क्रेडिट जरूरतों को पूरा करना, वित्तीय संस्थानों के लिए अप्रयुक्त बाजारों में बढ़ना और राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देना। हालाँकि, चुनौतियों का एक समूह इन संभावनाओं को सीमित करता है। महिलाओं में अक्सर वित्तीय साक्षरता और जागरूकता का स्तर कम होता है, और संपार्श्विक और क्रेडिट इतिहास की कमी होती है। आपूर्ति–पक्ष की चुनौतियाँ इस समस्या को और बढ़ा देती हैं, इनमें लिंग–संवेदनशील दृष्टिकोण और ऋण देने की प्राथमिकताओं की कमी, महिलाओं को जोखिम भरा ऋणी के रूप में समझना, और वित्तीय संस्थानों द्वारा महिला उद्यमियों की साख और वास्तविकता स्थापित करने में कठिनाई शामिल है। इसके अलावा, वित्त योजनाओं तक सार्वजनिक पहुंच की रिपोर्टिंग में भी लिंग–अलग–अलग डेटा की कमी लक्ष्यीकरण और प्रगति के मार्ग को कठिन बना देती है।

ऐसी अनेक प्रणालीगत सामाजिक–सांस्कृतिक बाधाएँ हैं जो महिला उद्यमिता को बाधित करती हैं। इनमें से, आपूर्ति और मांग दोनों पक्षों पर कई चुनौतियों के लिए, वित्तीय संसाधनों तक पहुंच को अक्सर एक जबरदस्त बाधा के रूप में रिपोर्ट किया गया है। जहां वित्तीय साक्षरता और मांग पक्ष में समावेशन को बढ़ावा देने की पहल की गई है, वहीं बहुत कुछ किया जाना बाकी है। इनमें से कुछ नीतिगत बदलाव नीचे हाइलाइट किए गए हैं:

क्रेडिट इतिहास बनाने और ग्रेजुएशन को सक्षम करने के लिए क्रेडिट ब्यूरो को अनिवार्य रूप से स्वयं सहायता समूह वित्तपोषण की रिपोर्टिंग की सुविधा के लिए दिशानिर्देश किए जाएँ ।

लाभ के बेहतर लक्ष्यीकरण को बढ़ावा देने के लिए वित्त तक पहुंच के लिए प्रमुख सार्वजनिक योजनाओं पर डेटा की लिंग–अलग–अलग रिपोर्टिंग के लिए तंत्र बनाएं।

लक्षित ऋण गारंटी कार्यक्रमों और क्षमता निर्माण और परामर्श जैसी गैर–वित्तीय सेवाओं के प्रावधान के माध्यम से महिला उद्यमियों को ऋण देने को बढ़ावा देने के लिए तंत्र विकसित करना।

ये विकास में सूक्ष्म उद्यमियों (महिलाओं के नेतृत्व वाले व्यवसायों का विशाल बहुमत) का समर्थन करने के साथ–साथ वित्तीय संस्थानों द्वारा अधिक से अधिक लिंग समावेशी ऋण को सक्षम करके, महिलाओं के नेतृत्व वाले व्यवसायों के लिए वित्त तक बेहतर पहुंच को सक्षम कर सकते हैं।

पूर्व छात्र बाइट्स

दयालबाग में शिक्षा की सबसे बड़ी उपलब्धि है...

"...हंसमुख, उत्पादक और अनुकूल वातावरण जिसने मुझे हर गतिविधि में भाग लेने के लिए प्रेरित किया जिससे मेरा सर्वांगीण विकास हुआ। इंटरएक्टिव क्लासेस, सहायक प्रोफेसरों और निरंतर परीक्षाओं ने मुझे अपने विषय के लिए जुनून विकसित करने में मदद की।

– रचना कुमार, वर्तमान में, पीआरटी, जेपी पब्लिक स्कूलय बैचः बीए (ऑनर्स) बी.एड (1997), पीजीडीटी (2014)

"...सफलता का सही अर्थ है, जो मन की शांति के अलावा और कुछ नहीं है। यह आपकी क्षमता को देखते हुए सर्वश्रेष्ठ बनने और दूसरों की मदद करने के तरीके खोजने की आत्म–संतुष्टि का प्रत्यक्ष परिणाम है।

–सुगंधा सिंघल, वर्तमान में, वीपी– हेड ट्रेजरी, एसआरएफ लिमिटेडय बैचः एमबीए (2001)

AAFDEI-APAC पर रिपोर्ट
वसंत वुप्पुलुरी द्वारा संकलित

एसोसिएशन ऑफ Alumni एंड फ्रेंड्स ऑफ DEI (AAFDEI) को 2009 में 1986 के आंतरिक राजस्व कोड के तहत संयुक्त राज्य अमेरिका में 501(c)(3) गैर–लाभकारी संगठन के रूप में पंजीकृत किया गया था। 2020 से, पूर्व छात्र प्लेसमेंट सहायता Cell (APAC) ने AAFDEI के भीतर एक समर्पित टीम के रूप में काम कर रहा है, जिसे AAFDEI-APAC के रूप में जाना जाता है। AAFDEI APAC का उद्देश्य संयुक्त राज्य अमेरिका और कनाडा में समुदाय के सदस्यों को करियर विकास सहायता प्रदान करना है। AAFDEI APAC उन उम्मीदवारों को समर्थन और मार्गदर्शन भी प्रदान करता है जो भारत से उत्तरी अमेरिका में संक्रमण कर रहे हैं।

एएएफडीईआई–एपीएसी ने उत्तर अमेरिका में उद्योगों और व्यवसायों की श्रेणी में कई सदस्यों को 'समर्थक' के रूप में सेवा देने के लिए नियुक्त किया है, जो नौकरी के अवसर की पहचान, रेफरल और प्लेसमेंट सहित कैरियर के विकास से संबंधित सलाह और सहायता प्रदान कर सकते हैं।

AAFDEI-APAC रुझान वाले विषयों पर त्रैमासिक वेबिनार भी आयोजित कर रहा है। ये विषय कैरियर के विकास पर ध्यान केंद्रित करते हैं। 2 अप्रैल, 2023 को एक आगामी वेबिनार में महिला सशक्तिकरण के विषय पर बोलने के लिए एक विशेषज्ञ को आमंत्रित करना शामिल होगा। इसके अलावा, AAFDEI-APAC हर महीने के पहले रविवार को मासिक कार्यालय समय रखता है जिसमें सदस्य विभिन्न मामलों पर मार्गदर्शन प्रदान करते हैं।

निरंतर सुधार की भावना को ध्यान में रखते हुए, AAFDEI-APAC समुदाय के सदस्यों से फीडबैक मांगने के लिए एक वार्षिक सर्वेक्षण आयोजित करता है। इस प्रतिक्रिया का उपयोग AAFDEI-APAC द्वारा आयोजित गतिविधियों के विस्तार के साथ–साथ ध्यान केंद्रित करने और समुदाय के लिए AAFDEI-APAC सेवाओं की दक्षता और वितरण में सुधार करने के लिए किया जाता है।

प्रकाशन समितियाँ / सम्पादकीय बोर्ड

डी.ई.आई
संरक्षक: प्रो. पी.के. कालरा
मुख्य संपादक: प्रो. जे.के. वर्मा
संपादक: डॉ. सोना दीक्षित, डॉ. सोनल सिंह, डॉ. अक्षय कुमार सत्संगी, डॉ. बानी दयाल धीर
सदस्यों: डॉ. चारु स्वामी, डॉ. नेहा जैन, डॉ. सौम्या सिन्हा, श्री आर.आर. सिंह, प्रो. प्रवीण सक्सेना, प्रो. वी. स्वामी दास, डॉ. रोहित राजवंशी, डॉ. भावना जौहरी
सलाहकार: प्रो. एस.के. चौहान
अनुवादक: डॉ. नमस्या, डॉ. निशीथ गौड़

डी.ई.आई.–ओ.डी.ई. (डी.ई.आई. ऑनलाइन और दूरस्थ शिक्षा)
संरक्षक: प्रो. पी.के. कालरा, प्रो. वी.बी. गुप्ता
संपादकीय सलाहकार: प्रो. एस.के. चौहान, प्रो. जे.के. वर्मा
संपादकीय मंडल: डॉ. सोनल सिंह, डॉ. मीना पायदा, डॉ. लॉलीन मल्होत्रा, डॉ. बानी दयाल धीर, श्री राकेश मेहता
अनुवादक: डॉ. स्वामी प्यारी कौड़ा

डी.ई.आई. Alumni (AADEIs & AAFDEI)
संपादक: प्रो. गुर प्यारी जंडियाल
संपादकीय समिति: डॉ. सरन कुमार सतसंगी, प्रो. साहब दास, डॉ. बानी दयाल धीर, श्रीमती शिफाली सत्संगी, श्रीमती अरुणा शर्मा, डॉ. स्वामी प्यारी कौड़ा, डॉ. गुरप्यारी भटनागर, डॉ. वसंत वुप्पुलुरी
अनुवादक: डॉ. स्वामी प्यारी कौड़ा

प्रशासनिक कार्यालयः पहली मंजिल, 63, नेहरू नगर, आगरा –282002।
पंजीकृत कार्यालयः 108, साउथ एक्स प्लाजा –1, साउथ एक्सटेंशन पार्ट II, नई दिल्ली–110049।

चित्रण, मुद्रण एवं ई–प्रकाशनः दयालबाग़ प्रेस